सतगुरु के दर पे प्रीत जो,अपनी निभा गए ।
उनको नमन है जो हमें, गुरमत सिखा गए ।

सच्चाई की पथ पे वो चलते रहे सदा,
गुरमत के ही सांचे में वो ढलते रहे सदा,
मनमत पे ना चलना कभी हमको बता गए ।

जो बात भी कहते थे वो कहते थे प्यार से,
नम्रता सत्कार से रहते थे प्यार से,
ये प्यार का सुंदर सा जहां बसां गए ।

सतगुरु के सामने रहे वो खुद को गवा के वो,
तू ही तू ही करते रहे वो खुद को मिटा के वो,
मरने से पहले मर के वो मुक्ति को पा गए ।

आया समा कैसा भी वो बढ़ते रहे सदा,
प्रचार हो सच का जगत करते रहे सदा,
उस पर चले जो रास्ता हमको सिखा गए।

<u>तर्ज : लग जा गले के...</u>